गाय–भैंस की बच्चेदानी/गर्भाशय सबन्धी बीमारियाँ

डा0 अंकेश कुमार,

सहायक प्राध्यापक, वेटनरी क्लीनिकल कॉम्पलेक्स

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना

जब कोई गाय/भैंस सांड से मिलने अथवा कृत्रिम गर्भाधान के बाद गर्मी में नहीं आती, तब पशु पालक मान लेता है कि गाय/भैंस गाभिन हो गई है। जब पशुपालक ऐसे पशु को समीपस्थ पशु चिकित्सालय में 4–5 माह बाद ले जाकर जाँच करवाता है, तब डॉक्टर की जाँच से मालूम होता है कि गर्भाशय में कोई और बीमारी जन्म ले रही है। इस बीमारी के कारण पशुपालक को 4–6 माह में व्यर्थ की आर्थिक हानि उठानी पड़ती है क्योंकि पशु से बच्चे मिलने का समय बढ़ जाता है, ब्याँतो के बीच का समय अधिक लम्बा हो जाता है। इसके साथ–साथ बच्चेदानी में मवाद के कारण पशुपालक को पैसा खर्च करना पड़ता है। ऐसे पशु के इलाज में जितनी अधिक देरी होगी, उतना ही पशु पालक को अधिक अर्थिक हानि उठानी पड़ेगी। अतः इस बीमारी के बारे में सभी जरूरी बातें जान लेना उनके लिए फायदे का काम है। यह बीमारी पशुओं के उनके गर्भकाल उथवा उनके प्रसव के तुरन्त बाद हो सकती है।

1. गर्भकाल के दौरान पशुओं की बच्चेदानी में मवाद या पीव पड़ जाना

गर्भकाल के शुरू के दिनों (साधारणतया पहले चार–पाँच महीने) में कुछ मवाद फैलाने वाले जीवाणु पशु की बच्चेदानी में यह बीमारी उत्पन्न करते हैं। इनमें 'ट्राईकोमोनस फीटस' परजीवी विशेष रूप से जिम्मेदार होता है। इस प्रकार के जीवाणु या तो गर्भाधान के समय वीर्य के साथ पशु के गर्भाशय में प्रवेश करते हैं या ये शरीर के अन्य भाग से खून द्वारा या जननांगों से प्रवेश करते हैं, जिसके कारण गर्भाशय में मवाद इकट्ठा हो जाता है तथा बच्चेदानी का आकार बढ़ जाता है। कभी–कभी जीवाणुओं के कारण गर्भपात भी हो जाता है। बच्चेदानी में मवाद होने का पता डॉक्टर द्वारा बच्चेदानी की जाँच द्वारा लगता है। इस बीमारी में ना तो पशु को कोई दर्द महसूस होता है और न ही कोई बीमारी जैसे लक्षण दिखाई देते है। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि पशु में गर्म होने के

लक्षण भी दिखाई नहीं देतेतथा दूध के उत्पादन में भारी कमी आ जाती है। कभी–कभी पशु की योनि में बदबूदार पीला रंग का मवाद मिला पानी सा निकलता है, जो कि पशुपालकों को पशु के बैठने या पेशाब/गोबर करने पर साफ दिखाई देता है, परन्तु इस द्रव्य की मात्रा बीमारी की स्थिति के अनुसार अलग–अलग हो सकती है। यह मवाद सफेद, सलेटी सफेद, हल्का या गाढ़ा पीला या छिछड़ेदार हो सकता है। जब यह मवाद बहुत दिनों तक आता रहता है तब पशु के पिछले भाग में एक सड़ाध जैसी बदबू आने लगती है और पशु की पूंछ या योनि के पास यह मवाद सूखकर चिपक भी जाता है। अनेक बार पशु इस मवाद को योनि के अन्दर से निकालने के लिए कोशिश करता है व निहुकता है, जैसे कुछ दर्द/तकलीफ हो।

2. पशु के ब्याने के बाद उनकी बच्चेदानी में मवाद पड़ना

पशु के ब्याने के बाद करीब 15–50 दिन तक में यह बीमारी देखने में मिलती है, जिसके कई कारण हो सकते हैं जिसमें प्रमुख है पशु के बच्चेदानी में बच्चे के फसने पर दी गई सहायता, पशु द्वारा यदि जेर न गिरायी गई हो अथवा पशु के प्रसव के बाद गर्भाशय में सूजन आ गयी हो। प्रायः पशु ब्याने के बाद 6 से 10 घण्टे के अन्दर जेर गिरा देता है, लेकिन कभी–कभी कमजोर पशु में गर्भाशय की माँसपेशियों में जेर बाहर निकालने के लिए उपलब्ध ताकत कम होने या न होने से पशु जेर नहीं गिरा पाता। इसके कारण गर्भाशय के अन्दर जेर के सड़ने–गलने से मवाद बनाने वाले जीवाणु से मवाद इक्ट्ठा हो जाता है। इस समय किसी भी प्रकार से जेर खींचने का प्रयत्न करने पर पशु के अन्दर बच्चेदानी के कमजोर माँसपेशियों के तन्तुओं के टूटकर फट जाने से व खून की नसों को खीचनें के उपरान्त नसों के फट जाने से अधिक खून जमा हो जाता है, जिससे मवाद और अधिक बनने लगती है। अतः पशुपालकों के लिए यह ध्यान देना जरूरी है कि पशु द्वारा जेर न डालने पर किसी मजदूर अथवा अन्य साधारण व्यक्ति की मदद न लेकर पशु के जननांगों को अधिक नुकसान होने

योनी द्वारा मवाद का बाहर आना

तथा परेशानी बढ़ाने से बचें। इस बीमारी के कारण पशु में थोड़ा बुखार, दाना–चारा न खाना या कम खाना, दूध की मात्रा कम हो जाना तथा पेट के नीचे दर्द इत्यादि होता है।

उपचार तथा रोकथाम

यदि ठीक समय पर बीमार पशुओं को चिकित्सक के पास ले जाकर जाँच कराई जाये तो इस बीमारी का सही इलाज सम्भव है। इसलिए पशुपालकों को निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

1. अपने पशु को गाभिन कराने के 3 महीनें के बाद जल्दी से जल्दी नजदीक के पशु चिकित्सालय में डॉक्टरी जाँच के लिए ले जाये।

2. यदि जाँच कराने पर पशु गाभिन निकले तब फिर से 2–2 माह के समय के अन्तर से जाँच करवाते रहना चाहिए। इस प्रकार से यदि गर्भपात या बच्चेदानी की बीमारी का पता जल्दी से लग सकेगा तो उसका सही इलाज जल्दी से हो सकेगा।

3. अगर गाभिन पशु की बच्चेदानी में से बदबूदार या किसी भी प्रकार का गंदा स्त्राव/द्रव्य निकलता है तो तुरन्त किसी पशु चिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए।

4. पशुओं में जब यह बीमारी काफी दिनों से हो रही होती है तथा जब उपचार बहुत मुश्किल होता है तो पशु बाँझ तक हो सकती है। इसलिए पशु का ध्यान सावधानी से रखना चाहिए।

5. यदि पशु द्वारा ब्याने के 10 से 12 घंटे तक जेर नहीं गिरायी है तो तुरन्त पशु चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए।

6. इस बीमारी में न तो खुद और न ही किसी अन्जान आदमी जैसे ग्वाला, मजदूर, पड़ोसी आदि द्वारा पशु की छेड़छाड़ करवानी चाहिए। समय से डॉक्टर की सलाह लेकर ही कुछ करें।

7. गाभिन पशुओं को साफ–सुथरे बाड़े में अलग करके रखना चाहिए, जहाँ पर किसी प्रकार के संक्रामक जीवाणु के कारण बीमारी न पहूँच सके।

8. गाभिन पशु में किसी भी नये लक्षण दिखने पर जल्दी से जल्दी पशुचिकित्सक से जाँच करवायें तथा बताये गये इलाज का ध्यान से उपयोग करें।